B.A (Sanskrit, Hons) part-I

1st paper

(कुमारसम्भव) • पञ्चम सर्ग की कथावस्तु

By

Dr. Sanjay Kumar Chaubey

(Assistant professor)

Dept. of Sanskrit

H.D. Jain college, Ara

Scanned by CamScanner

(कुमारसम्भव)
– पञ्चमसर्ग की कथावस्तु

महाकवि कालिदास विरचित कुमारसम्भव महाकाव्य के पञ्चम सर्ग में पार्वती के तपस्या की विधि तथा शङ्कर द्वारा ब्रह्मचारी का वेष धारण कर ली गई पार्वती की परीक्षा का वर्णन है।

इस सर्ग की कथा के अनुसार जब शिव ने काम को पार्वती के समक्ष ही भस्म कर दिया तो उनका मनोरथ टूट गया और वे मन ही मन अपने रूप को कोसने लगीं। प्रिय का प्रेम ही तो रूप का फल है —

तथा समक्षं दहता मनोभवं पिनाकिना भग्नमनोरथा सती।
निनिन्द रूपं हृदयेन पार्वती प्रियेषु सौभाग्यफला हि चारुता॥

किन्तु वह निराश नहीं हुई और उन्होंने दृढ़ तपस्या द्वारा अपने सौन्दर्य को सफल बनाने का निश्चय किया। शिव जैसा पति और उनकी अर्द्धाङ्गिनी बनाने वाला प्रेम, उन्हें और किसी प्रकार से मिलता ही कैसे? पार्वती के तप की बात मैना ने सुनी तो उन्हें छाती से लगा लिया और समझाया। परन्तु पार्वती का निश्चय बदला नहीं। मैना के प्रयास करने पर भी पार्वती ने अपना निर्णय नहीं बदला। ईप्सित फल की प्राप्ति हेतु स्थिर निश्चय वाले मन तथा निम्नाभिमुख जलप्रवाह को कौन है जो उलट सकता है —

क ईप्सितार्थस्थिरनिश्चयं मनः पयश्च निम्नाभिमुखं प्रतीपयेत्।

उसके पिता महान् थे। उन्होंने आज्ञा दे दी और पार्वती सखी के साथ गौरीशङ्कर शिखर पर तपस्या करने लगी।

पहले उन्होंने सौम्य तप किया, उन्होंने तपोवन बनाया, जिसमें विरोधी प्राणी सौहार्द से रहते, वृक्ष फलों से अतिथि सत्कार होता और कुटिया में अग्नि प्रज्वलित रहती। वे स्वयं समय से स्नान करतीं, मृगचर्म पहनतीं और स्वाध्याय में लगी रहतीं। पार्वती के कोमल शरीर और नवीन उम्र में इस प्रकार की नियमशीलता से ऋषि मुनियों को भी आश्चर्य होता —

दिदृक्षवस्तामृषयोऽभ्युपागमन् न धर्मवृद्धेषु वयः समीक्ष्यते।

पार्वती को लगा कि सौम्य तप से उसका मनोरथ पूरा नहीं होगा और वे कठोर तप में लग गईं। वे ग्रीष्म में चारों ओर चार अग्नि जला टकटकी लगा सूर्य को देखतीं यानी पञ्चाग्नि तप सम्पन्न करतीं —

शुचौ चतुर्णां ज्वलतां हविर्भुजां शुचिस्मिता मध्यगता सुमध्यमा।
विजित्य नेत्रप्रतिघातिनीं प्रभामनन्यदृष्टिः सवितारमैक्षत॥

Scanned by CamScanner

जो पानी उसके मुँह में पड़ जाता वह और चन्द्र की रसात्मक किरणें ये ही होते उपवास की पारणा —

अयाचितोपस्थितं केवलं रसात्मकस्योडुपतेश्च रश्मयः।
बभूव तस्याः किल पारणाविधिर्न वृक्षवृत्तिव्यतिरिक्तसाधनः॥

इस प्रकार वे वृक्षों जैसा जीवन बितातीं। उनके पंचाग्नि तप की शान्ति वर्षा की जल धारा से होती। वर्षा में भी वे खुली चट्टान पर सोतीं। रातें बिजली की आँखों से उनके तप का दर्शन करतीं। हेमन्त और शिशिर में रात-रात भर वे जल में खड़ी रहतीं। तब उनके मुख से ऐसा लगता जैसे जलाशय में अभी भी कमल है। अन्त में उन्होंने तप की पराकाष्ठा कर दी। वे वृक्षों से स्वयं गिरे पत्तों को ही खाकर रहने लगीं। उसलिये उन्हें अपर्णा कहा जाने लगा —

स्वयं विशीर्णद्रुमपर्णवृत्तिता परा हि काष्ठा तपसस्तया पुनः।
तदप्यपाकीर्णमतः प्रियंवदां वदन्त्यपर्णेति च तां पुराविदः॥

इस प्रकार के अनेक व्रतों का पालन उन्होंने अपने सुकोमल शरीर से इस प्रकार किया कि कठिन शरीरों से तप करने वाले ऋषि-मुनियों के तप भी उसके सामने फीके पड़ गये —

तपःशरीरैः कठिनैरुपार्जितं तपस्विनां दूरमधश्चकार सा॥

एक दिन एक तेजस्वी ब्रह्मचारी पार्वती के आश्रम में पहुँचा। जटाधारी, बोलने में प्रगल्भ और ब्रह्म तेज से दमकते हुये उस ब्रह्मचारी का पार्वती ने सत्कार किया। वह सरल दृष्टि से पार्वती की ओर देखते हुये बोला कि सुलभ तो हैं तुम्हें तपोऽनुष्ठान के लिये समिध व कुश, स्नान के योग्य जल भी स्नान सुलभ है न? तपश्चर्या करने में जितनी शक्ति है उतना ही प्रवृत्त होती हैं न? अरे शरीर को ही तो धर्म की सिद्धि का पहला साधन माना गया है। हे पार्वति! तप यानी सुन्दर शरीर पापवृत्ति की ओर नहीं बढ़ाता, ऐसा वचन आज बिलकुल ठीक प्रतीत होता है। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण तुम हो। तपस्वियों के लिये भी उपदेश बन गया है तुम्हारा शील —

तथा हि ते शीलमुदारदर्शने तपस्विनामप्युपदेशतां गतम्॥

Scanned by CamScanner

ब्रह्मचारी कहता है कि जो विधाता ने सबसे पहले बनाया उस कुल में हुआ है जन्म पार्वती का। शरीर को देख लगता है कि तीनों लोकों का सौन्दर्य एकत्र इकट्ठा सा हो गया है। ऐश्वर्य, सुख को खोजने की जरूरत है ही नहीं अवस्था भी नई है, इसके अतिरिक्त कौन सा फल है जिसकी कामना से यह कठोर तप कर रही है? तपस्वी पार्वती से पुनः कहता है - 'तुम्हारे व्रत, नियमों और सत्कार से मुझे साहस होता है इसलिये मैं चूहते की धृष्टता कर रहा हूँ कि तुम यह तप किसलिये कर रही हो? इसका अन्य कोई कारण समझ में नहीं आता। लगता है तुमने किसी ही वर को चुन रखा है जो तुम्हारी उपेक्षा कर रहा है। क्या यह सत्य है? क्या तुम यह बतलाओगी वह है वह नासमझ! मेरा भी पूर्वाश्रम का तप संचित है, लो मैं उसका आधा अंश तुम्हें देता हूँ और कामना करता हूँ कि तुम्हें तुम्हारा अभीष्ट वर मिल जाय। पर बतलाओ तो वह है कौन? — तपस्या करके यदि स्वर्ग की चाह रखती हो तो ऐसा करना निरर्थक है। तुम्हारे पिता के क्षेत्र देवभूमियाँ ही हैं। यदि तपस्या से वर प्राप्त करना चाहती हो तो वह भी अनावश्यक ही प्रतीत होता है क्योंकि रत्न थोड़े ही किसी को खोजता है, वह तो खोजा जाता है —

दिवं यदि प्रार्थयसे वृथा श्रमः पितुः प्रदेशास्तव देवभूमयः।
अथोपयन्तारमलं समाधिना न रत्नमन्विष्यति मृग्यते हि तत्॥

पार्वती ने सखी को इशारा किया। उसने कामदेव को शिव द्वारा भस्म करने से सम्बन्धित समस्त पुरानी घटना सुना दी और कहा कि यह मदन के द्वारा जिनको रूप से आकृष्ट नहीं किया जा सकता ऐसे पिनाक-पाणि शिव को अपने पति के रूप में प्राप्त करना चाहती है —

अरूपहार्यं मदनस्य निग्रहात् पिनाकपाणिं पतिमाप्तुमिच्छति॥

हमारी सखी के लगाये पेड़ तो फलने लगे, परन्तु इसके मनोरथ रूपी बीज में अङ्कुर भी नहीं दीखता। ब्रह्मचारी ने पार्वती से पूछा - 'क्या यह सब सच है?' पार्वती ने कहा- उसी को पाने का क्षुद्र उपाय है यह तप। मनोरथ कहीं भी पहुँच सकता है —

तपः किलेदं तदवाप्तिसाधनं मनोरथानामगतिर्न विद्यते॥

Scanned by CamScanner

ब्रह्मचारी फिर बोला— अरे यह कैसी बात, कहाँ तुम और कहाँ शिव? उस अमांगलिक औघड़ के साथ सम्बन्ध का अनुमोदन मैं तो नहीं करूँगा। अवांछनीय के लिये हठ है तुम्हारा यह निश्चय। शिव के साथ में लिपटे होंगे सर्प। तुम्हारा कंकण बंधा हाथ जब शिव के हाथ में पहुँचेगा तो सोचो क्या होगा? तुम्हारे कलहंस चिह्नित दुकूल के साथ शिव के रक्त रंजित चर्म की जोड़ी कैसी लगेगी? शिव के साथ विवाह होते ही तुम्हारे अलक्तक रंजित पैर पड़ेंगे बिखरे केश वाली श्मशान भूमि में। वधू के रूप में तुम बैठाई जाओगी अलंकृत हथिनी पर और विदाई के समय तुम्हें बैठना पड़ेगा शिव के बूढ़े बैल पर। यह देख तुम्हारे ऊपर महाजन हँसेंगे नहीं? शिव कपाल धारण करते हैं। पहले केवल चन्द्रकला को ही देख-देख कर चित्त व्यथित होता था, उस कपाली शिव के साथ, अब तुम्हें देखकर भी हृदय दुःखी होगा। वर की कोई भी विशेषता शिव में नहीं। शरीर में तीन आँखें, जनम का पता नहीं और पहनने को कौपीन तक नहीं। इसलिये तुम असत् आग्रह से मन को मोड़ लो।'

पार्वती ने यह सुना तो उनको क्रोध आ गया और उन्होंने कहा— शिव का चरित अद्वितीय है तथा अचिन्त्य भी। ऐसा न जानने के कारण ही ब्रह्मचारी उनकी निन्दा में प्रवृत्त हुआ है। मन्द व्यक्ति महात्माओं के उत्तम चरित से द्वेष करते ही हैं। शिव ठहरे निष्काम। उनको मङ्गल से क्या लेना। माना कि उनके पास कुछ नहीं है तब भी इन्द्रादि लोकपालों की भी इच्छाएँ पूरी करते हैं। उनके वास्तविक रूप को कोई नहीं जान सका।

शिव विश्वमूर्ति हैं, अतः कुछ भी पहन ओढ़ सकते हैं। अलंकार से और सर्प से उनमें अन्तर नहीं आता। चिताभस्म तभी तक चिताभस्म है जब तक वह शिव का स्पर्श नहीं पाती। उसके बाद तो उसे देवता लोग भी सिर पर धारण करते हैं। माना कि शिव बूढ़े बैल पर चलते हैं किंतु ऐरावत पर चलनेवाला इन्द्र उन्हें प्रणाम करता रहता है। अजन्मा के जन्म का पता न चलना ही स्वाभाविक है। विवाद की आवश्यकता नहीं। मैं शिव को ही चाहती हूँ। मुझे

अपयश का भय नहीं। इस पर ब्रह्मचारी के ओंठ फिर से फड़के तो पार्वती ने सखी से कहा — सखी! मना कर इसे, यह फिर कुछ कहना चाहता है। महापुरुषों के प्रति अपशब्द कहने से ही नहीं सुनने से भी पाप लगता है अथवा मैं ही यहाँ से हट जाती हूँ —

न केवलं यो महतोऽपभाषते शृणोति तस्मादपि यः स पापभाक्॥

इतना कहकर पार्वती ने चलने के लिये पैर उठाया ही था कि उन्हें किसी ने पकड़ लिया। देखा कि वे भगवान् शिव ही थे। वे ही आये थे ब्रह्मचारी के रूप में। उन्हें देख पार्वती असमंजस में पड़ गईं। उनका उठा पैर उठा ही था। तब भगवान् शिव ने कहा — 'प्रिये, मैं आज से तुम्हारा तप के मूल्य से खरीदा हुआ दास ही हूँ —'

अद्य प्रभृत्यवनतांगि! तवास्मि दासः क्रीतस्तपोभिरिति वादिनि चन्द्रमौलौ। अह्नाय सा नियमजं क्लममुत्ससर्ज क्लेशः फलेन हि पुनर्नवतां विधत्ते॥

इस वाक्य से पार्वती का समस्त क्लेश भुला गया। इससे क्लेश पुनः नवीनता लाता है।